EBGUE4

पाठ – 2.2

जनतंत्र का जन्म

रामधारी सिंह 'दिनकर'

जीवन परिचय

आधुनिक युग के वीर रस के श्रेष्ठ कवि के रूप में स्थापित रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितम्बर 1908 को बिहार के मुँगेर जिले के सिमरिया घाट में हुआ था। वे बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष रहे। उन्होंने भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार (1965 से 1971 तक) के रूप में भी कार्य किया। वे छायावादोत्तर कवियों में पहली पीढ़ी के माने जाते हैं। उनकी कविताओं में ओज, आक्रोश व क्रान्ति की पुकार है। उन्हें राष्ट्रकवि भी कहा जाता है। उनकी प्रमुख कृतियाँ ***कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, संस्कृति के चार अध्याय, परशुराम की प्रतीक्षा, आत्मजयी*** *व* ***उर्वशी*** *आदि रही हैं। उन्हें अपनी रचनाओं के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार व भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया, उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया।*

सदियों की ठंडी– बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्‌टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

जनता? हाँ मिट्‌टी की अबोध मूरतें वही,
जाड़े– पाले की कसक, सदा सहने वाली,
जब अंग–अंग में लगे साँप हों चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द सहने वाली।

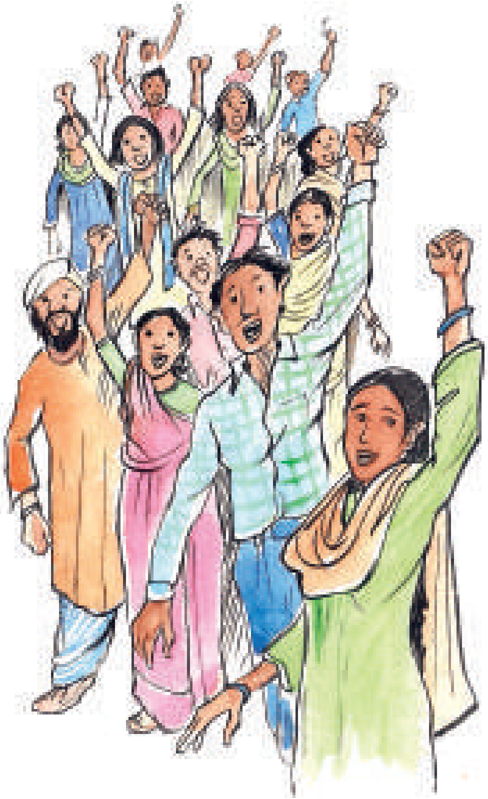

जनता? हाँ, लम्बी–बड़ी जीभ की वही कसम,
''जनता सचमुच ही बड़ी वेदना सहती है।''
सो ठीक, मगर आखिर इस पर जनमत क्या है?
है प्रश्न गूढ़; जनता इस पर क्या कहती है?

मानो, जनता हो फूल जिसे एहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार सजा लो दोनों में;
अथवा कोई दुधमुहीं जिसे बहलाने के
जंतर–मंतर सीमित हो चार खिलौनों में।

लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटी चढ़ाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
साँसों के बल से ताज़ हवा में उड़ता है
जनता की रोके राह समय में ताब कहाँ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्त्राब्द का अंधकार
बीता, गवाक्ष अंबर के दहके जाते हैं,
यह और नहीं कोई जनता के स्वप्न अजय
चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते जाते हैं।

सबसे विराट् जनतंत्र जगत् का आ पहुँचा,
तैंतीस कोटि–हित, सिंहासन तैयार करो;
अभिषेक आज राजा का नहीं प्रजा का है,
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिए तू किसे ढूँढता है मूरख,
मंदिरों, राज प्रासादों में, तहखानों में?
देवता कहीं सड़कों पर गिट्‌टी तोड़ रहे
देवता मिलेंगे, खेतों में, खलिहानों में।

फावड़े और हल राजदंड बनने को हैं,
धूसरता सोने से श्रृंगार सजाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

शब्दार्थ

नाद = आवाज, **अबोध** = अज्ञान मूर्ख, **कसक** = पीड़ा, **गूढ़** = गुप्त, छिपा हुआ **जंतर–मंतर** = यंत्र मंत्र (जादू टोना), **कोपाकुल** = क्रोध से व्याकुल, **भृकुटी** = भौहें , **काल** = मृत्य,समय **अब्दों** = वर्षों, **शताब्दियों** = सैकड़ों वर्षों, **सहस्त्राबद** = हजार वर्ष, **अंधकार** = **अंधेरा** , **गवाक्ष** = खिड़की, **दहके** = आग से जलने की क्रिया, **तिमिर** = अंधेरा, **विराट्** = बहुत बड़ा, **प्रासादों** = महलों।

अभ्यास

पाठ से

1. 'अभिषेक आज राजा का नहीं प्रजा का है' यह किस अवसर के लिए कहा गया है?
2. जब जनता की भौंहे क्रोध में तन जाती हैं तो क्या–क्या होता है?
3. बदली हुई परिस्थितियों में अब राजदण्ड किसे बनाया जाएगा और क्यों?
4. जनता की सहनशीलता के कवि ने क्या–क्या उदाहरण दिए हैं?
5. कवि ने गिट्‌टी तोड़नेवालों और खेतों में काम करने वालों को देवता क्यों कहा है?
6. कवि ने जनता के लिए सिहांसन खाली कर देने के लिए क्यों कहा है?
7. जगत का सबसे विराट जनतंत्र किसे कहा गया है?

पाठ से आगे

EBQQFR

1. 'अंग–अंग में लगे साँप हों चूस रहे' पंक्ति में जनता के किस प्रकार के शोषण की ओर संकेत किया गया है? आपके मत में यह शोषण किन–किन के द्वारा होता रहा होगा?

2. (क) किसी भी लोकतांत्रिक देश में नागरिकों का जागरुक होना क्यों आवश्यक है? अपने विचार लिखिए।

(ख) आपके गाँव/मोहल्ले के लोगों में किस–किस तरह की चेतना जगाने की ज़रूरत है? उदाहरण सहित लिखिए।

(ग) इन्हें जागरूक करने के लिए क्या–क्या प्रयास करने होंगे?

भाषा के बारे में

EBZLHE

1. निम्नांकित शब्दों के क्या अर्थ हैं? इन्हें ध्यान से पढ़कर उनके अर्थ लिखिए। आप इसमें शब्दकोश की भी मदद ले सकते हैं?

नाद, गूढ़, भृकुटी, बवंडर, अब्द, गवाक्ष, तिमिर, अम्बर, प्रासाद, धूसरता।

2. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) ठंडी बुझी राख का सुगबुगाना।

(ख) भृकुटी चढ़ाना।

(ग) हवा में ताज उड़ना।

(घ) सिर पर मुकुट धरना।

(ङ) आरती लिए ढूँढ़ना।

(च) सिंहासन खाली करना।

3. निम्न शब्दों के विलोम शब्द लिखिए।

(क) वेदना (ख) सीमित (ग) तिमिर (घ) प्रासाद

समास

दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से जब एक नया शब्द बनता है तो उसे सामासिक शब्द और इस प्रक्रिया को समास कहते हैं।

समास के प्रकार

(1) **तत्पुरुष समास** – जब किसी शब्द में पूर्व पद गौण तथा उत्तरपद प्रधान होता है तो वहाँ तत्पुरुष समास होता है। ये संज्ञा और संज्ञा के मिलने से तथा संज्ञा और क्रिया मूलक शब्दों के मिलने

से बनते हैं। जैसे– स्नानगृह (स्नान के लिए गृह) हस्तलिखित (हस्त द्वारा लिखित)। इनके समस्तपद बनते समय विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है तथा इसके विपरीत समास विग्रह करते समय विभक्ति चिह्नों– से, पर, को, द्वारा, का, के लिए आदि का प्रयोग किया जाता है।

तत्पुरुष समास के उपभेद (प्रकार) – तत्पुरुष समास के दो उपभेद हैं–

(क) कर्मधारय तथा (ख) द्विगु कर्मधारय (तत्पुरुष) समास –

(क) इसमें पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है। पूर्वपद तथा उत्तरपद में उपमेय उपमान संबंध भी हो सकता है।

विशेषण विशेष्य

जैसे– पीतांबर, महाविद्यालय, नीलगाय।

उपमेय और **उपमान** – घनश्याम, कमलनयन, चंद्रमुख।

(ख) **द्विगु समास** – द्विगु समास में भी उत्तरपद प्रधान होता है और विशेष्य होता है जबकि पूर्वपद संख्यावाची विशेषण होता है।

जैसे– पंचवटी, तिराहा, शताब्दी, चौमासा आदि।

(2) **बहुब्रीहि समास** – जिस सामासिक शब्द में आए दोनों ही पद गौण होते हैं और दोनों मिलकर किसी तीसरे पद के विषय में कुछ कहते हैं और यह तीसरा पद ही 'प्रधान' होता है।

जैसे– नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका अर्थात् शंकर

दशमुख – दश मुख वाला अर्थात् रावण

चतुर्भुज – चार भुजाएँ है जिसकी अर्थात् विष्णु

(3) **द्वंद्व समास** – जिस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं उसे द्वंद्व समास कहते हैं। इसमें दोनों पद को जोड़नेवाले अव्यय – 'और', 'या' का लोप हो जाता है। जैसे–

राजा – रानी	राजा और रानी
पति – पत्नी	पति और पत्नी
हार – जीत	हार या जीत/हार और जीत
दूध – दही	दूध और दही।

(4) **अव्ययी भाव समास** – जिस समास में पूर्वपद अव्यय हो उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं।

जैसे– प्रतिदिन, यथाशक्ति, आमरण बेखटके

द्विगु और बहुब्रीहि समास में अंतर–द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद उसका विशेष्य परंतु बहुब्रीहि समास में पूरा पद ही विशेषण का काम करता है।

कई ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें दोनों समासों के अंतर्गत रखा जा सकता है। जैसे–

चतुर्भुज – चार भुजाओं का समूह (द्विगु)

चार भुजाएँ हैं जिसकी (बहुब्रीहि)

इसी तरह त्रिनेत्र, चतुर्भुख। तीन आँखों का समूह तथा चार मुखों का समूह (द्विगु समास) जबकि त्रिनेत्र – तीन नेत्र हैं अर्थात् शिव तथा चार मुख है जिनके अर्थात् ब्रह्मा (बहुब्रीहि समास) में लेंगे, यानी इनके विग्रह पर निर्भर करता है कि इन्हें किस समास के अंतर्गत रखा जाएगा।

4. पाठ में आए इन शब्दों का समास विग्रह कर समासों के नाम लिखिए–

- कोपाकुल, राजप्रासाद, जनतंत्र, कोटिहित, जनमत
- ठंडी–बुझी, जंतर–मंतर, जाड़े–पाले
- सहस्राब्द, शताब्दी
- दुधमुँही, गूढ़प्रश्न

EC9HJ2

योग्यता विस्तार

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' की कुछ अन्य रचनाएँ खोजकर पढ़िए।
2. जनतंत्र का जन्म 'ओज' गुण की कविता है। 'ओज' वीर रस का ही गुण है। वीर रस की कोई अन्य कविता ढूँढ़कर कक्षा में उसका वाचन कीजिए।
3. इन कवियों के बारे में बताइए कि ये मुख्यतः किस रस की कविता के लिए जाने जाते हैं। इस हेतु पुस्तकालय एवं अपने शिक्षक की सहायता लीजिए।

(क) सूरदास (ख) कबीरदास (ग) विद्यापति

(घ) काका हाथरसी (ङ) भूषण